स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचार - सार्थकता एवं प्रासंगिकता

अरुण कुमार वर्मा*

स्वामी विवेकानंद मूलतः संन्यासी विचारक थे। परंतु उनका चिंतन धर्म के साथ-साथ जीवन से जुड़े अन्य विषयों को समाहित किए हुए है जिनमें शिक्षापरक विचार प्रमुख है। भारत के विश्व प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री रवींद्रनाथ ठाकुर, महर्षि अरविंद, महात्मा गांधी, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, ज़ाकिर हुसैन आदि के साथ लिया जाने वाला उनका नाम भी प्रमुख है। स्वामी विवेकानंद ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को सबसे अचूक हथियार बताया है। उन्होंने किताबी ज्ञान के साथ-साथ आत्मिक विकास को अनिवार्य माना है। उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा को महत्त्व दिया है। स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता पर बल देते हुए उन्होंने स्वीकार किया है कि ''जो देश व राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते वे कभी बड़े नहीं हो पाए हैं और न भविष्य में कभी होंगे।''[1] उनके शिक्षा संबंधी विचारों में सर्वत्र एक नयी ताज़गी और स्फूर्ति परिलक्षित होती है जो किसी भी शिक्षा व्यवस्था को बोझिल होने से बचाती है। प्रस्तुत आलेख में स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचारों की सार्थकता एवं प्रासंगिता का विवेचन किया गया है।

शिक्षा को व्यवहार परिवर्तन की प्रमुख कड़ी मानते हुए स्वामी जी ने जीवन निर्माण, मानव निर्माण एवं चरित्र निर्माण को शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य स्वीकार किया है। उन्होंने शिक्षा को सिर्फ जानकारी हासिल करने का साधन न मानते हुए, व्यक्तित्व के विकास को शिक्षा का मूल उद्देश्य माना है जो व्यक्ति के साथ-साथ जन-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती हो। इस संदर्भ में उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए हैं ''*वह शिक्षा जो जन समुदाय को जीवन समुदाय के उपयुक्त नहीं*

* *प्रवक्ता (हिंदी)*, जवाहर नवोदय विद्यालय, सिरमौर, जिला-रीवा (म.प्र.)-486448

बनाती, जो उनकी चारित्रिक शक्ति का विकास नहीं करती, जो उनमें दया का भाव और सिंह का साहस पैदा नहीं करती, क्या उसे भी हम शिक्षा का नाम दे सकते हैं।''[2] शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित करते हुए उन्होंने आत्मनिर्भर, चरित्रवान, आत्म बल और स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण वाली शिक्षा पर बल दिया है। वे समाज में मानव मूल्यों की स्थापना के सच्चे हिमायती थे। उनके वक्तव्य से इस बात की पुष्टि होती है *''हम मनुष्य बनाने वाले सिद्धांत ही चाहते हैं। हम सर्वत्र सभी क्षेत्रों में मनुष्य बनाने वाली शिक्षा ही चाहते हैं।''*[3]

स्वामी विवेकानंद ने मनुष्य के व्यवहारिक जीवन के समस्त विषयों पर व्यापक चिंतन प्रस्तुत किया है। मनुष्यता के उत्थान से जुड़े समस्त विषयों पर उन्होंने अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज के सम्मुख रखा है। शैक्षिक प्रक्रिया में इन्होंने बालक को सर्वोत्तम माना है। बालक स्वयं ही शिक्षित हो जाता है। शिक्षक सिर्फ उसे आगे बढ़ाने में सहायक मात्र है। यदि शिक्षक उसे शिक्षा देने का प्रयास करता है तो वह उसे अपने ही ढंग से आगे बढ़ाने में सहायता कर सकता है। इस संदर्भ में उनका मत है *''बालक स्वयं अपने आप को शिक्षित करता है। शिक्षक ऐसा समझकर कि वह शिक्षा दे रहा है, सब कार्य बिगाड़ डालता है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अंदर अवस्थित है, उसे केवल जागृत, केवल प्रबोधन की आवश्यकता है और बस इतना ही शिक्षक का कार्य है।''*[4] वे मानते थे कि हर बच्चे में असंख्य प्रवृत्तियाँ होती हैं जिनके विकास के स्वतंत्र अवसर नहीं प्राप्त हो पाते। उनके सुधार के लिए बलात् हस्तक्षेप उलटे परिणाम ही देता है। उनका यह दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को गति प्रदान करता है।

शिक्षक–शिक्षार्थी संबंधों पर भी स्वामी जी ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। *उन्होंने स्वीकार किया था कि बालक अनंत शक्तियों का पुंज है। उनकी शक्तियों की पहचान एवं वह जहाँ है वहीं से शिक्षा की शुरूआत ही शिक्षक का कार्य है। शिक्षकों के कार्य निर्धारित करते हुए वे लिखते हैं ''तुम किसी बालक को शिक्षा देने में उसी प्रकार असमर्थ हो जैसे कि किसी पौधे को बढ़ाने में, पौधा अपनी प्रकृति का विकास आप ही कर लेता है। बालक भी अपने आप को शिक्षित कर लेता है, पर हाँ तुम उसे अपने ही ढंग से बढ़ने में सहायता दे सकते हो। तुम जो कुछ कर सकते हो वह निषेधात्मक ही होगा, विधात्मक नहीं। तुम केवल बाधाओं को हटा सकते हो और बस ज्ञान अपने स्वाभाविक रूप में प्रकट हो जायेगा। जमीन को कुछ पोली बना दो ताकि उसमें उगना आसान हो जाय। उसके चारों ओर घेरा बना दो और देखते रहो कि कोई उसे नष्ट न कर दे। उस बीज से उगते हुए पौधों की शारीरिक बनावट के लिए मिट्टी, पानी और समुचित वायु का प्रबंध कर सकते हो और बस यहीं तुम्हारा कार्य समाप्त हो जाता है।''*[5] स्वामी जी ने शिक्षक के अंदर ज्ञान, शुद्ध चरित्र एवं निःस्वार्थ सेवा जैसे गुणों को आवश्यक माना है। बालकों में मूल्य तभी निर्मित होगा जब शिक्षक मूल्यवान एवं चरित्रवान होगा। दुनिया पवित्र और अच्छी तभी हो सकती है जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे होंगे।

स्त्री शिक्षा के संबंध में भी स्वामी विवेकानंद जी ने स्त्रियों की सभी समस्याओं के हल के लिए शिक्षा को ही मुख्य चाभी माना है। उन्होंने महसूस किया था कि *''स्त्रियों की बहुत सी कठिन समस्याएँ हैं पर उनमें से एक भी ऐसी नहीं जो उस जादू भरे शब्द 'शिक्षा' के द्वारा हल न हो सके।''*[6] उन्होंने जेंडर असमानता को गलत मानते हुए समानता का अवसर प्रदान करने की बात कही है। इस संदर्भ में उन्होंने वेदांत एवं मनुस्मृति का उदाहरण देते हुए माना है कि शिक्षित और धार्मिक माँ ही महापुरुषों को जन्म दे सकती है। स्त्री शिक्षा पर उनका दृष्टिकोण इस प्रकार है *''हमारा हस्तक्षेप करने का अधिकार केवल शिक्षा का प्रचार कर देने तक सीमित है। हमें महिलाओं को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। उनके लिए ये काम न कोई कर सकता है और न किसी को करना चाहिए। हमारी भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं नारियों की भाँति इसे रखने की क्षमता रखती हैं।''*[7] स्वामी जी के स्त्री शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण को लक्ष्य करते हुए रश्मि श्रीवास्तव लिखती हैं *''स्वामी विवेकानंद के व्याख्यानों, विवेचनों व स्त्री कल्याण के प्रति किए गए उनके कार्यों से भारत में महिला शिक्षार्थी की जो रूपरेखा हमें प्राप्त हो सकी है वो कुल मिलाकर आधुनिकता व परंपरा का एक संतुलित रूप है जो आधुनिक संदर्भों में सकारात्मक पक्षों को लेकर अपने परंपरागत ताने-बाने में गूँथ लेने जैसा है।''*[8]

स्वामी विवेकानंद मानवीय करुणा के चिंतक थे। उन्होंने मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। वे चाहते थे कि शिक्षा का प्रचार-प्रसार जन-जन तक हो। जो शिक्षित हो वो शिक्षा का प्रसार जन-जन तक करे। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचनी चाहिए। इस संदर्भ में उनका विचार है *''एक बात जो भारत वर्ष में सभी बुराइयों की जड़ है, वह है गरीबों की अवस्था। मान लो तुमने प्रत्येक गाँव में नि:शुल्क पाठशाला खोल दी पर तो भी उससे कोई लाभ न होगा, क्योंकि गरीब लड़के पाठशाला में आने की अपेक्षा अपने पिता की सहायता करने खेतों में जाना या जीविका के लिए और कोई धंधा करना अधिक पसंद करेंगे।..... यदि गरीब बालक शिक्षा लेने नहीं आ सकता तो शिक्षा को ही उसके पास पहुँचना चाहिए।''*[9] आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसान एवं मज़दूरी पर जीवनयापन करने वाले परिवारों में यह स्थिति बनी हुई है। वर्तमान में 'सर्व शिक्षा अभियान' एवं 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009' में उनके विचारों को महत्त्व दिया गया है। स्वामी जी जहाँ एक ओर आचरण एवं आत्मिक विकास का एकमेव मार्ग शिक्षा को मानते थे वहीं दूसरी ओर शारीरिक दुर्बलता को नकारते हुए स्वास्थ्य शिक्षा पर अधिक बल देते हैं। युवकों को उनकी सलाह है कि गीता के अभ्यास की अपेक्षा फुटबॉल खेलने से तुम स्वर्ग के अधिक निकट आ सकते हो। अर्थात् जब तुम स्वस्थ रहोगे तभी गीता को और अच्छी तरह समझ एवं सीख सकोगे।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के जिस उद्देश्य की परिकल्पना की है वह भारत के संदर्भ में बहुत ही सार्थक और प्रासंगिक है। आज से सवा सौ साल पूर्व जब शिक्षा में विषय या पाठ्यक्रम के महत्त्व को सर्वोपरि मानते हुए उसे रटने पर बल दिया जाता था। उस समय उन्होंने बालक के स्वतंत्र अस्तित्व की बात स्वीकार करते हुए बालक के अनुरूप शिक्षा की बात कही थी, जिसे बाल-केन्द्रित शिक्षा के रूप में वर्तमान समय में स्थान मिला है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में उसकी विचारधारा को स्वीकार किया गया है *''बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हमारे स्कूल आज भी सभी बच्चों को ऐसा नहीं महसूस करवा पाते। सीखने का आनंद व संतोष के साथ रिश्ता होने के बजाय भय, अनुशासन व तनाव से संबंध हो तो सीखने के लिए अहितकारी होता है।''*[10] स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा में जिस आचरण, मूल्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा की बात कही है आज के संदर्भ में उसकी सार्थकता और बढ़ जाती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में उसकी महती आवश्यकता है और वह वर्तमान ही नहीं भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगी।

स्वामी विवेकानंद मूलत: शिक्षा शास्त्री नहीं थे, लेकिन उन्होंने शिक्षा में जिस सिद्धांत की परिकल्पना की है वह उन्हें महान शिक्षाविद के पद पर प्रतिष्ठित करती है। उन्होंने आज से सवा सौ साल पूर्व जिस बाल-केन्द्रित शिक्षा का बीज रोपा था उसके पल्लवित एवं विकसित रूप में आज हर बालक को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उन्होंने शिक्षा में जिन मूल्यों की बात की थी उनकी तरफ आना वर्तमान में हमारी ज़रूरत है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानंद के विचार आज भी सार्थक एवं प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी रहेंगे।

संदर्भ

1. *स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन.* अरुण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2012, पृ. 56
2. वही, पृ. 13
3. वही, पृ. 14
4. वही, पृ. 11
5. वही, पृ. 11
6. वही, पृ. 57
7. मुमुक्षानंद, स्वामी. 2004. *विवेकानंद साहित्य, खंड-4.* अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कोलकता पृ. 22
8. श्रीवास्तव, रश्मि. 2009. विवेकानन्द के स्त्री शिक्षा संबंधी विचार (सार्थकता एवं प्रासंगिकता). *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, वर्ष 30, अंक 1 जुलाई 2009, पृ.116
9. *स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन.* अरुण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2012, पृ. 63
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005*, नयी दिल्ली, पृ.16